

2,18,25. तव पादयोः Bṛh. P. 7,2,34. श्रुश्रुष्यन्ति HARIV. 7614. PASS.:
यैः कर्मभिः प्रचरितैः श्रुश्रुष्यन्ते द्विजातयः M. 10,100. R. GORR. 2,58,23.
श्रुश्रुषितस्तेन MBH. 12,4388. 15,117. Bṛh. P. 6,18,30. PĀṆĀT. 118,
24. — Vgl. श्रुश्रुषक fgg.

— desid. vom. caus. श्रिआवयिषति und श्रुआवयिषति P. 7,4,81.

Vop. 19,15.

— caus. vom desid. = desid. zu Jmdes Dienst sein: गर्हं श्रुश्रुषयेत्
KULL. zu M. 2,243. vielleicht nur fehlerhaft für श्रुश्रुषेत.

— श्रु 1) hören RV. 2,24,13. नानु श्रुआव कश्चन das hat Niemand
gehört so v. a. das ist unerhört AV. 11,4,25. ÇAT. Br. 1,6,1,3. इत्यनु-
श्रुश्रुम Bṛh. P. 1,44. MBH. 1,7460 (°श्रुश्रुम: fälschlich ed. Calc.). 13,3815.
5702. 14,2760. HARIV. 47. Verz. d. Oxf. H. 63,b,10 (°श्रुश्रुम:). Bṛh. P.
3,14,2. ऋषीणामनुश्रुषवताम् 1,9,25. 10,84,8. नानुश्रुश्रुम ज्ञावेतत् M. 9,
100. MBH. 1,2166. Bṛh. P. 3,33,37. 5,6,17. 8,12,46. 10,33,40. 85,59.
पुत्राश्चास्यानुश्रुश्रुम (so ed. Bomb. st. °श्रुश्रुम: der ed. Calc.) MBH. 1,
3740. तृतीयमन्यं लेकिषु वर्षं नैवानुश्रुश्रुम 8,241. नैतत्समस्तमभयं कस्मिं-
श्चिदनुश्रुश्रुम (so ed. Bomb.) 4,1591. तमः सत्त्वं रजश्चैव पृथक् नानुश्रुश्रुम
14,1069. PASS.: तद्यथानुश्रुषते PĀṆĀT. 3,9. 6,3. 234,5. तदा ऋषीणाम-
नुश्रुतमास ÇAT. Br. 1,6,2,1. 9,1,25. 3,1,4,4. Bṛh. P. 5,25,8. — 2)
von Neuem —, wieder hören: श्रुतं श्रुतमेवार्थमनुश्रुणोति PRAÇNOP. 4,5.
श्रोत्रं श्रुषवत्सर्वं प्राणा श्रुनुश्रुषवन्ति KAUSH. Up. 3,2. — Vergl. श्रुश्रुव
und °श्रुआव. — desid. gehorchen: कौसल्यातो ऽतिरिक्तं च सो ऽनुश्रुषवते
हि माम् (मम श्रुश्रुषते बहु ed. Bomb.) R. 2,8,18. Vgl. श्रुनुश्रुषा.

— श्रुभि 1) hören, vernehmen: खगानां च विकृजितम् । श्रुनीक्षणमभि-
श्रुवती HARIV. 4383. जगतां ऽभिश्रुषवतः Bṛh. P. 4,4,10. तमागतमभिश्रुत्य
MBH. 1,4427. — 2) partic. °श्रुत bekannt AV. 6,138,1. — Vgl. श्रुभिआव.

— श्रा 1) hinhören, horchen, lauschen auf (acc., bei Personen gen.
oder dat.) RV. 1,139,7. नवमानस्य 190,1. 4,3,3. 5,45,10. 46,8. क्वम्
7,67,10. कार्वे 3,33,9. 10. 10,95,11. AV. 5,13,5. 20,5. 6,142,2. ÇAT.
Br. 1,5,2,6. घोषम् 9,5,1,2. 8. PĀṆĀT. Br. 21,3,5. Bṛh. P. 3,4,10. —
2) hören, vernehmen: श्राश्रुत्य वचः Bṛh. P. 1,19,22. 3,19,33. 5,10,16.
7,2,36. 8,24,16. 10,21,3. 60,22. श्राश्रुत hörbar: श्राश्रुततरं वदति TS.
2,5,11,1. — 3) zusagen, versprechen; mit acc. der Sache und dat. der
Person P. 1,4,40. Vop. 5,15. R. ed. Bomb. 2,58,27. श्राश्रुत zugesagt,
versprochen AK. 3,2,58. H. 1489. कुर्याद्यथाश्रुतम् JĀṆĀ. 2,196. — 4)
श्राश्रुत = श्राश्रावित der rituelle Zuruf KĀT. Çr. 3,2,6. 5,4,33. 9,11. TS.
7,3,11,2. — Vgl. 1. श्राश्रव, श्राश्रुत्, श्राश्रुति. — caus. 1) verkünden, be-
kannt machen: आ नो जनें श्रवयतम् RV. 7,62,5. श्राश्रावयन्तं इव श्लोक-
मायवः 1,139,3. यत्तं देवेष्वाश्रावय ÂÇV. Çr. 1,3,23. श्राश्रावयच्च तत्कर्म
MBH. 3,15260. Bṛh. P. 5,6,17. 10,70,49 (med.). 73,34. — 2) anreden,
anrufen: यो ज्ञातान्याश्रावयति श्लोकैर्न RV. 5,82,9. आ यो रवेण पृथिवी-
मंश्रुश्रुवुः 10,94,12. mit dopp. acc. Jmd Etwas sagen: श्राश्राव्य रामं
डुवाच्यम् Bṛh. P. 10,68,29. — 3) speziell vom rituellen Zurufen, na-
mentlich des Adhvarju an den Agnidh zum Aussprechen der श्राषट्-
Formel AV. 9,6,49. VS. 19,24. श्रा स्वधेत्याश्रावयति TBr. 1,6,2,5. श्रा-
श्रावयेतीदं देवाः श्रुणुतेति TS. 2,5,11,8. 3,1,2,3. ÇAT. Br. 1,5,1,1. fgg.
2,7. 2,7. 2,5,2,34. ÂÇV. Çr. 1,3,23. 4,12. 4,15,11. 9,7,9. श्रोमित्याश्रा-
वयति KĀND. Up. 1,1,9. श्रोआवपेत्याश्रावयति TAĪTT. Up. 1,1,8; vgl.

P. 8,2,92. VĀRT. श्राश्रावित n. der rituelle Zuruf: श्रुमिकेत्रस्याश्रावि-
तम् TBr. 2,1,5,9. ÇAT. Br. 11,4,2,5. KĀT. Çr. 3,3,14. — 4) herbei-
rufen, zu sich heranzulocken: परस्य ज्ञानम् BHATṬ. 12,30. — 5) besprechen:
श्राश्रावित (मन्त्र) R. 5,82,10. — Vgl. श्राश्रावण. — desid. श्राश्रुषति
(nicht °ते) P. 1,3,59. Vop. 23,57.

— प्रत्या, partic. °श्रुत n. = प्रत्याश्रावित TS. 7,3,11,2. KĀT. Çr. 3,
2,6. 5,4,33. Z. d. d. m. G. 9, LXII. Vgl. प्रत्याश्राव. — caus. den rituellen
Zuruf beantworten (mit Worten wie अस्तु स्वधा, अस्तु श्राषट् u. s. w.)
TBr. 1,6,2,5. ÇAT. Br. 1,5,2,7. 2,6,1,25. ÂÇV. Çr. 9,7,10. 1,4,13.
partic. प्रत्याश्रावित n. die Erwiderung auf den rituellen Zuruf TBr.
2,1,5,9. ÇAT. Br. 14,9,2,9. Vgl. प्रत्याश्रावण.

— समा caus. mit dopp. acc. Jmd Etwas mittheilen: कृष्णरामौ (acc.)
समाश्राव्य पुत्रांस्कंसविक्रिसितान् Bṛh. P. 10,85,28.

— उप 1) anhören, hören, vernehmen: गिरः RV. 1,82,1. ब्रह्माणि 6,
40,4. 45,23. 32,9. 7,32,1. 4,41,2. याश्चेदमुपश्रुषवन्ति याश्च ह्यं परागताः
10,97,21. ÇAT. Br. 4,6,2,17. 8,1,4,9. 11,8,2,8. श्रापिति तुवत उपाश्रु-
पोत् PĀṆĀT. Br. 8,2,2. 12,5,11. AV. 12,4,27. 20,127,1. TBr. 3,1,2,
5. KĀND. Up. 3,13,8. 4,1,5. उपश्रुषवन्तु मे सर्वे साक्षीभूता वनेचराः R. 3,
51,34. तस्योपविष्टस्य सतो विश्रास्योपश्रुषवतः । पुनरेव कथां चक्रुः
MBH. 5,6039. 12,2043. R. 2,3,3 (2,3 GORR.). 20,33. 3,73,36. 5,70,15.
6,107,2. तावुपश्रुत्य गायत्री R. 1,3,65 (4,25 SCHL.). उपाश्रुणोद्विर्गदितं
वचः Bṛh. P. 2,9,6. 4,20,26. Verz. d. Oxf. H. 255,a,19. उपश्रुत्य वचः
MBH. 2,1244. 13,282. 4033. 14,2063. HARIV. 91. R. 3,26,5. 6,98,14. 7,
81,1. ÇĀK. 15,11, v. l. UTTARAR. 30,12 (40,3). Bṛh. P. 1,11,3. 15,33. 2,
9,21. 3,19,34. 4,3,5. 9,16,14. 10,28,3. PĀṆĀT. ed. OFN. 59,15. यमुपश्रु-
त्य सेनग्रे जनः सर्वो विदीर्यते MBH. 7,329. Bṛh. P. 1,12,27. तमुपश्रुत्य
संरुद्धम् HARIV. 6774. Bṛh. P. 6,5,34. तव प्रज्ञामुपश्रुत्य नारदात् MBH.
15,462. Verz. d. Oxf. H. 47,b,27. शिष्याडुपश्रुत्य प्रातं रामम् R. 3,18,
12. VIKR. 11,15. भवानीपतेर्मुखकमलात् HALL in der Einl. zu VĀSĀVAD. 24.
उपश्रुषवान् MBH. 4,1494. Bṛh. P. 1,16,14. partic. उपश्रुत gehört, vernom-
men HARIV. 5305. Bṛh. P. 4,15,23. पुलस्त्यस्य सकाशात् MBH. 3,4032. —
2) उपश्रुत zugesagt, versprochen AK. 3,2,58. — Vgl. उपश्रुति fgg. — desid.
med. zuhören, aufmerken AIT. Br. 3,2.

— समुप anhören, hören, vernehmen: भर्तृभगवत्कथां समुपश्रुणोति Bṛh.
P. 5,19,2. तेषां तु समुपश्रुत्य सूतमागधवन्दिनाम् । सर्वा बुबुधिरं R. GORR.
2,67,4. ब्राह्मणात्समुपश्रुत्य MBH. 1,384.

— परि hören, vernehmen: पतिं हि परिश्रुषवती रामम् hörend von,
Etwas erfahrend über R. 5,29,35. तामागतां परिश्रुत्य 6,99,19. — partic.
°श्रुत 1) gehört, vernommen: कथा MBH. 1,4685. न च नस्तादृशं दृष्टं नैव
चापि परिश्रुतम् 9,1194. 10,200. 13,5804. सर्वलोकां 14,834. यत्र पारतमं
वृत्तमृषीणां मे परिश्रुतम् 12,6156. R. GORR. 2,18,34. उदाराश्रापि वंशे
ऽस्मिन्नाज्ञानो मे परिश्रुतोः MBH. 1,3754. परिश्रुतो मया पूर्वं रामेणैव स-
हायवान् R. 4,14,15. इति परिश्रुतम् impers. HARIV. 2010. — 2) bekannt
als, geltend für, gekannt als, genannt: अश्वमेधः क्रतुश्रेष्ठः तत्रियाणां
परिश्रुतः HARIV. 11110. महावन्दसकृष्णाणां शतं पत्रं परिश्रुतम् R. 6,4,
58. श्रीर्नाम्नाहं परिश्रुता MBH. 13,3856. पूतेनेति परिश्रुता HARIV. 3423.
R. 7,35,20. bekannt so v. a. berühmt MBH. 12,1799 (nach der Lesart
der ed. Bomb.). 3127. Bṛh. P. 4,9,5. — 3) fehlerhaft für प्रतिश्रुत